हिंदी (ऐच्छिक)

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

प्रश्नपत्र संख्या 29/1/1

खंड - 'ख'

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

विश्व के प्रायः सभी धर्मों में अहिंसा के महत्त्व पर बहुत प्रकाश डाला गया है। भारत के सनातन हिंदू धर्म और जैन धर्म के सभी ग्रंथों में अहिंसा की विशेष प्रशंसा की गई है। 'अष्टांगयोग' के प्रवर्तक पतंजलि ऋषि ने योग के आठों अंगों में प्रथम अंग 'यम' के अन्तर्गत 'अहिंसा' को प्रथम स्थान दिया है। इसी प्रकार 'गीता' में भी अहिंसा के महत्त्व पर जगह-जगह प्रकाश डाला गया है। भगवान महावीर ने अपनी शिक्षाओं का मूलाधार अहिंसा को बताते हुए 'जियो और जीने दो' की बात कही है। अहिंसा मात्र हिंसा का अभाव ही नहीं, अपितु किसी भी जीव का संकल्पपूर्वक वध नहीं करना और किसी जीव या प्राणी को अकारण दुख नहीं पहुँचाना है। ऐसी जीवन-शैली अपनाने का नाम ही 'अहिंसात्मक जीवन शैली' है।

अकारण या बात-बात में क्रोध आ जाना हिंसा की प्रवृत्ति का एक प्रारम्भिक रूप है। क्रोध मनुष्य को अंधा बना देता है; वह उसकी बुद्धि का नाश कर उसे अनुचित कार्य करने को प्रेरित करता है, परिणामतः दूसरों को दुख और पीड़ा पहुँचाने का कारण बनता है। सभी प्राणी मेरे लिए मित्रवत् हैं। मेरा किसी से भी वैर नहीं है, ऐसी भावना से प्रेरित होकर हम व्यावहारिक जीवन में इसे उतारने का प्रयत्न करें तो फिर अहंकारवश उत्पन्न हुआ क्रोध या द्वेष समाप्त हो जाएगा और तब अपराधी के प्रति भी हमारे मन में क्षमा का भाव पैदा होगा। क्षमा का यह उदात्त भाव हमें हमारे परिवार से सामंजस्य कराने व पारस्परिक प्रेम को बढ़ावा देने में अहम् भूमिका निभाता है।

हमें ईर्ष्या तथा द्वेष रहित होकर लोभवृत्ति का त्याग करते हुए संयमित खान-पान तथा व्यवहार एवं क्षमा की भावना को जीवन में उचित स्थान देते हुए अहिंसा का एक ऐसा जीवन जीना है कि हमारी जीवन-शैली एक अनुकरणीय आदर्श बन जाए।

(क) अहिंसात्मक जीवन शैली से लेखक का क्या तात्पर्य है? **2**

(ख) कैसी जीवन-शैली अनुकरणीय हो सकती है? **2**

(ग) ''जियो और जीने दो'' की बात किसने कही? इसका आशय स्पष्ट कीजिए। **2**

(घ) अहिंसा में क्रोध और द्वेष को छोड़ने की बात पर लेखक ने क्यों बल दिया है? **2**

(ङ) क्षमा का भाव पारिवारिक जीवन में क्या परिवर्तन ला सकता है? **2**

(च) 'क्रोध अंधा बना देता है' - का आशय स्पष्ट कीजिए और बताइए कि लेखक ने इसे हिंसा की प्रवृत्ति का प्रारम्भिक रूप क्यों कहा है? **2**

(छ) उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए - अनुचित, पारस्परिक। **1**

(ज) विशेषण बनाइए - उन्नति, क्षमा। **1**

(झ) प्रस्तुत गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। **1**

2. प्रस्तुत काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए **पाँचों** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **1 x 5 = 5**

"धर्मराज, यह भूमि किसी की नहीं क्रीत है दासी,
हैं जन्मना समान परस्पर इसके सभी निवासी।
है सबका अधिकार मृत्तिका पोषक - रस पीने का,
विविध अभावों से अशंक होकर जग में जीने का।
सबको मुक्त प्रकाश चाहिए, सबको मुक्त समीरण
बाधा-रहित विकास, मुक्त आशंकाओं से जीवन।
लेकिन, विघ्न अनेक अभी इस पथ में पड़े हुए हैं,
मानवता की राह रोक कर पर्वत अड़े हुए हैं।
न्यायोचित सुख सुलभ नहीं जब तक मानव-मानव को,
चैन कहाँ धरती पर, तब तक शान्ति कहाँ इस भव को?
जब तक मनुज-मनुज का यह सुख-भाग नहीं सम होगा,
शमित न होगा कोलाहल, संघर्ष नहीं कम होगा।
था पथ सहज अतीव, सम्मिलित हो समग्र सुख पाना,
केवल अपने लिए नहीं, कोई सुख-भाग चुराना।"

(क) "यह धरती किसी की खरीदी हुई दासी नहीं है" - इस कथन से कवि का क्या तात्पर्य है?

(ख) इस धरती पर सभी को क्या-क्या अधिकार प्राप्त हैं?

(ग) भाव स्पष्ट कीजिए - 'सबको मुक्त प्रकाश चाहिए, सबको मुक्त समीरण।'

(घ) आज मानव-समाज में किस बात को लेकर संघर्ष हो रहा है?

(ङ) मनुष्य इस धरती पर केवल अपने लिए ही सुख क्यों चाहता है?

अथवा

इस समाधि में छिपी हुई है
एक राख की ढेरी।
जलकर जिसने स्वतंत्रता की
दिव्य आरती फेरी।।

यह समाधि, यह लघु समाधि, है
झाँसी की रानी की।
अंतिम लीला-स्थली यही है
लक्ष्मी मर्दानी की।।

यहीं कहीं पर बिखर गई वह
भग्य विजय-माला-सी।
उसके फूल यहाँ संचित हैं
है वह स्मृति-शाला-सी।।

सहे वार पर वार अंत तक
लड़ी वीर बाला-सी।
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर
चमक उठी ज्वाला-सी।।

बढ़ जाता है मान वीर का
रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की
भस्म यथा सोने से।।

रानी से भी अधिक हमें अब
यह समाधि है प्यारी।
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की
आशा की चिनगारी।।

(क) कवि किसकी समाधि की बात कर रहा है? उसे 'मर्दानी' क्यों कहा है?

(ख) आशय स्पष्ट कीजिए :
'यहीं कहीं पर बिखर गई वह
भग्न विजय-माला-सी।।

(ग) 'सोने की भस्म सोने से अधिक मूल्यावान होती है' - यह किस संदर्भ में कहा गया है?

(घ) रानी के युद्ध कौशल के बारे में कविता में क्या कहा गया है?

(ङ) कवि को रानी की समाधि रानी से भी अधिक प्यारी क्यों है?

खंड - 'ख'

3. निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** पर निबंध लिखिए : **10**

(क) मुड़ो : प्रकृति की ओर

(ख) आतंकवाद : मानवता का दुश्मन

(ग) महानगरों में वरिष्ठ नागरिकों की उभरती समस्याएँ

(घ) क्या नहीं कर सकती नारी

4. दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले किसी विशेष कार्यक्रम पर अपना मत व्यक्त करते हुए दूरदर्शन के महानिदेशक को पत्र लिखिए। **5**

अथवा

हिंदी सीखने-पढ़ने के प्रति बढ़ रही प्रवृत्ति का उल्लेख करते हुए किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखकर हिंदी प्रसार को और अधिक व्यापक बनाने के लिए अपने सुझाव दीजिए।

5. मुद्रित माध्यमों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताइए कि इनके लेखन में किन-किन बातों पर ध्यान देना अपेक्षित है। **5**

अथवा

दूरदर्शन पर समाचार पढ़ते समय वाचक को कौन-कौन सी सावधानियाँ बरतनी चाहिए? उनका उल्लेख कीजिए।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर **एक-दो** वाक्यों में दीजिए :

(क) वेबसाइट पर हिंदी पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय किसे दिया जाता है? **1**

(ख) 'उलटा पिरामिड-शैली' का स्वरूप बताइए। **1**

(ग) फ़ीचर किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए। **1**

(घ) पत्रकारिता में स्तम्भ लेखन से क्या तात्पर्य है? **1**

(ङ) विशेष रिपोर्ट के किन्हीं दो प्रमुख प्रकारों का उल्लेख कीजिए। **1**

खंड - 'ग'

7. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **8**

आनाकानी आरसी निहारिबो करौगे कौलों?
    कहा मो चकित दसा त्यों न दीठि डोलिहै?
मौन हू सौं देखिहौं कितेक पन पालिहौ जू,
    कूकभरी मूकता बुलाया आप बोलि है।
जान घनआँद यों मोहिं तुम्हें पैज परी,
    जानियैयो टेक टरें कौन धौं मलोलिहै।।
रुई दिए रहौगे कहाँ लौं बहरायबे की?
    कबहूँ तौ मेरियै पुकार कान खोलिहै।

अथवा

जो है वह सुगबुगाता है
जो नहीं है वह फेंकने लगता है पचखियाँ
आदमी दशाश्वमेघ पर जाता है
और पाता है घाट का आखिरी पत्थर
कुछ और मुलायम हो गया है
सीढ़ियों पर बैठे बंदरों की आँखों में
एक अजीब-सी नमी है
और एक अजीब-सी चमक से भर उठा है
भिखारियों के कटोरों का निचाट खालीपन

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** के उत्तर दीजिए : **3 + 3 = 6**

(क) 'मैंने देखा, एक बूँद', कविता के आधार पर 'सागर' और 'बूँद' का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ख) ''कुसुमित कानन हेरि कमलमुखि मूंदि रहए दु नयान'' - पद में चित्रित वियोगिनी नायिका की मनोदशा का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

(ग) 'एक कम' कविता में हाथ फैलाने वाले व्यक्ति को कवि ने ईमानदार क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।

9. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं **दो** का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए : **3 + 3 = 6**

(क) बरसाती आँखों के बादल - बनते जहाँ भरे करुणा-जल
लहरें टकराती अनंत की - पाकर जहाँ किनारा।
हेम कुंभ ले उषा सवेरे - भरती ढुलकाती सुख मेरे।
मदिर ऊँघते रहते जब - जगकर रजनी भर तारा।

(ख) रैनि अकेलि साथ नहिं सखी। कैसें जिऔं बिछोही पँखी।।
बिरह सैचान भँवै तन चाँड़ा। जीयत खाई मुहँ नहिं छाँड़ा।।
रकत ढरा आँसू गरा हाड़ भए सब संख।
धनि सारस होइ ररि मुई आइ समेटहु पंख।।

(ग) चलती सड़क के किनारे लाल बजरी पर चुरमुराए पाँव तले
ऊँचे तरुवर से गिरे
बड़े-बड़े पियराए पत्ते
कोई छह बजे सुबह जैसे गरम पानी से नहाई हो -
खिली हुई हवा आई, फिरकी-सी आई, चली गई।

10. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **6**

ज़रा-सी आहट पाते ही वे एक साथ सिर उठा कर चौंकी हुई निगाहों से हमें देखती हैं - बिलकुल उन युवा हिरणियों की तरह, जिन्हें मैंने एक बार कान्हा के वन्य-स्थल में देखा था। किन्तु वे डरती नहीं, भागती नहीं, सिर्फ़ विस्मय से मुसकुराती हैं और फिर सिर झुकाकर अपने काम में डूब जाती हैं - यह समूचा दृश्य इतना साफ़ और सजीव है - अपनी स्वच्छ मांसलता में इतना संपूर्ण और शाश्वत - कि एक क्षण के लिए विश्वास नहीं होता कि आने वाले वर्षों में सब कुछ मटियामेट हो जाएगा - झोंपड़े, खेत, ढोर, आम के पेड़ - सब।

अथवा

साहित्य का पांचजन्य समरभूमि में उदासीनता का राग नहीं सुनाता। वह मनुष्य को भाग्य के आसरे बैठने और पिंजड़े में पंख फड़फड़ाने की प्रेरणा नहीं देता। इस तरह की प्रेरणा देने वालों के वह पंख कतर देता है। वह कायरों और पराभव-प्रेमियों को ललकारता हुआ एक बार उन्हें भी समरभूमि में उतरने के लिए बुलावा देता है।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** के उत्तर दीजिए : **4 + 4 = 8**

(क) गाड़ी पर सवार होने के बाद संवदिया के मन की क्या स्थिति हुई? उस स्थिति से उबरने के लिए उसने क्या सोचा?

(ख) कुटज के जीवन से हमें क्या शिक्षा मिलती है? उसे 'गाढ़े का साथी' क्यों कहा गया है?

(ग) ''मनोकामना की गाँठ भी अद्भुत, अनूठी है, इधर बाँधो उधर लग जाती है।''- कथन के आधार पर 'दूसरा देवदास' कहानी की नायिका पारो की मनोदशा का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

12. केशवदास **अथवा** सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी किन्हीं दो प्रमुख काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। **6**

अथवा

रामचंद्र शुल्क **अथवा** पं. चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली की दो प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर लिखिए : **3+3+3 = 9**

(क) 'सूरदास की झोंपड़ी' कहानी में सूरदास की आर्थिक हानि कैसे हुई? वह जगधर से अपनी आर्थिक हानि को गुप्त क्यों रखना चाहता था?

(ख) 'आरोहण' कहानी के आधार पर भूप दादा के चरित्र की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ग) 'बिस्कोहर की माटी' में लेखक ने गरमी और लू से बचने के लिए जिन उपायों का वर्णन किया है, क्या आप उन उपायों के पक्ष में हैं? तर्क सम्मत उत्तर दीजिए।

(घ) 'अपना मालवा' के लेखक को क्यों लगता है कि हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं, वह उजाड़ अपसभ्यता है? आपकी क्या मान्यता है?

13. 'सूरदास की झोंपड़ी' कहानी में सूरदास के चरित्र की किन-किन विशेषताओं का चित्रण हुआ है? उन्हें अपने शब्दों में लिखिए। **6**

अथवा

'पहाड़ों में जीवन अत्यंत कठिन होता है।' 'आरोहण' पाठ के आधार पर सोदाहरण विवेचन कीजिए।

प्रश्नपत्र संख्या 29/1

खंड - 'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः

आधुनिक युग में व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों के कारण सौंदर्य को वस्तु या दृश्य में नहीं, देखने वाले की दृष्टि और उसकी सौंदर्य-चेतना में अवस्थित माना जाता है। अतः आज का कवि असुंदर में सुंदर, लघु में विराट या अचेतन में चेतन के दर्शन करता है। जीवन और जगत् का कोई भी विषय उसके लिए असुंदर नहीं है। वह मानवीय भावनाओं या काल्पनिक संसार पर ही नहीं, ठोस भौतिक-प्राकृतिक पदार्थों एवं मानव के साथ-साथ चींटी, छिपकली, चूहे, बिल्ली जैसे विषयों पर भी सहज भाव से रचना करता है। उसे तो क़दम-क़दम पर विषय के चौराहे मिलते हैं और वह उन पर महाकाव्य रचने के आमंत्रण पाता है।

कविता यद्यपि उपदेश देने के लिए नहीं लिखी जाती, तथापि उसका एक उद्देश्य हमारे भावों-विचारों को उदात्त बनाना, उनमें परिष्कार कर उन्हें जनोपयोगी बनाना भी है। जीवन के घात-प्रतिघातों और मन की विविध उलझनों को कवि इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि पाठक को अनायास ही कुटिलता, क्रूरता, दंभ, नीचता जैसे दुर्गुणों से वितृष्णा हो जाती है और सद्गुणों के प्रति आकर्षण बढ़ जाता है। भावों और विचारों की उच्चता से काव्य में भी गरिमा आती है क्योंकि सद्विचारों की अभिव्यक्ति स्वतः काव्य को ऊँचा उठा देती है। इसीलिए बहुधा महापुरुषों, जननायकों के जीवन को आधार बनाकर काव्य-रचना की जाती है। दूसरी ओर मूक प्रकृति की शोभा या अबोध शिशु के सौंदर्य की प्रशंसा में लिखी गई पंक्तियाँ भी पाठक के मन में यह प्रभाव छोड़ जाती हैं कि सरल-सहज जीवन भी आकर्षक और आनंददायक हो सकता है। कविता की प्रेरणाप्रद पंक्तियाँ निराशा में आशा का संचार कर सकती हैं और डूबते का सहारा बन सकती हैं। यही कारण है कि कबीर, रहीम, तुलसी आदि की अनेक पंक्तियाँ सूक्ति बन गई हैं जिनका सार्थक प्रयोग अनपढ़ ग्रामीण भी करते हैं।

(क) सौंदर्य की स्थिति कहाँ मानी जाती है? **1**

(ख) आज का कवि कैसे विषयों पर रचना करता है? **1**

(ग) आशय स्पष्ट कीजिएः 'उसे तो क़दम-क़दम पर विषयों के चौराहे मिलते हैं।' **2**

(घ) कविता का उद्देश्य क्या है? **1**

(ङ) कविता किनके प्रति कैसे वितृष्णा जगाती है? **2**

(च) महापुरुषों को काव्य का विषय क्यों बनाया जाता है? 1

(छ) कुछ कवियों की काव्य-पंक्तियाँ सूक्तियों के रूप में क्यों प्रयुक्त होती हैं? 1

(ज) कविता में गरिमा कैसे आती है? 1

(झ) कविता से प्राप्त प्रेरणा हममें क्या परिवर्तन ला सकती है? 1

(ञ) इस गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ट) निम्नलिखित में उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए : 1

अनायास, व्यक्तिवादी।

(ठ) निम्नलिखित शब्दों के पर्याय गद्यांश से ढूँढ़कर लिखिए : 1

घमंड, वाचाल।

(ड) 'कविता की प्रेरणाप्रद पंक्तियाँ निराशा में आशा का संचार कर सकती हैं।' इस वाक्य को मिश्रवाक्य-रचना में बदलकर लिखिए। 1

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **1 x 5 = 5**

सोने चाँदी से नहीं किन्तु
तुमने मिट्टी से किया प्यार।
हे ग्राम-देवता! नमस्कार
जन-कोलाहल से दूर कहीं
एकाकी सिमटा-सा निवास,
रवि-शशि का उतना नहीं
कि जितना प्राणों का होता प्रकाश,
श्रम-वैभव के बल पर करते हो
जड़ में चेतन का विकास,
दानों-दानों से फूट रहे
सौ-सौ दानों के हरे हास,
यह है न पसीने की धारा
यह गंगा की है धवल धार,
हे ग्राम-देवता! नमस्कार!
तुम जन-मन के अधिनायक हो
तुम हँसो कि फूले-फले देश
आओ, सिंहासन पर बैठो

यह राज्य तुम्हारा है अशेष।
उर्वरा भूमि के नये खेत के
नये धान्य से सजे देश,
तुम भू पर रहकर भूमि-भार
धारण करते हो मनुज-शेष
अपनी कविता से आज तुम्हारी
विमल आरती लूँ उतार!
हे ग्राम-देवता! नमस्कार!

(क) किस विशेष गुण के कारण कवि ग्राम-देवता को प्रणाम करता है?

(ख) ग्राम-देवता के निवास की क्या विशेषता है?

(ग) किसान के पसीने को कवि 'गंगा की धवल धार' क्यों मानता है?

(घ) कवि किसान को कहाँ बिठाना चाहता है और क्यों?

(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए - 'तुम भू पर रहकर भूमि-भार
धारण करते हो मनुज-शेष'

अथवा

पहले से कुछ लिखा भाग्य में
मनुज नहीं लाया है,
अपना सुख उसने अपने
भुजबल से ही पाया है।

प्रकृति नहीं डर कर झुकती है
कभी भाग्य के बल से,
सदा हारती वह मनुष्य के
उद्यम से, श्रमजल से।

ब्रह्मा का अभिलेख पढ़ा -
करते निरुद्यमी प्राणी
धोते वीर कु-अंक भाल का
बहा भ्रुवों से पानी।

भाग्यवाद आवरण पाप का
        और शस्त्र शोषण का,
जिससे रखता दबा एक जन
        भाग दूसरे जन का।

पूछो किसी भाग्यवादी से,
        यदि विधि-अंक प्रबल है,
पद पर क्यों देती न स्वयं
        वसुधा निज रतन उगल है?

(क) कैसे लोग भाग्यवादी होते हैं?

(ख) प्रकृति मनुष्य के आगे कब और क्यों झुकती है?

(ग) कवि ने भाग्यवाद को 'शोषण का शस्त्र' क्यों कहा है?

(घ) ''धोते वीर कु-अंक भाल का
बहा भ्रुवों से पानी'' -
उपर्युक्त पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ङ) काव्यांश के मूल संदेश को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

खंड - 'ख'

3. निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** विषय पर निबन्ध लिखिए : **10**

(क) बाल मज़दूरी : समस्या और समाधान

(ख) मोबाइल बिना सब सूना

(ग) धूम्रपान : जीवन के लिए घातक

(घ) प्रगति की ओर भारत के कदम

4. आपके बैंक में कुछ नए कर्मचारियों के आ जाने से ग्राहक-सेवा के स्तर में सुधार आ गया है। इसके कुछ उदाहरण देकर बैंक के मुख्य-प्रबंधक को उन कर्मचारियों की प्रशंसा करते हुए पत्र लिखिए। **5**

अथवा

'यूनिसेफ़' के एक सर्वेक्षण में पाया गया है कि आज भी विश्वभर में सबसे अधिक बाल-विवाह भारत में होते हैं। इसके कारणों की चर्चा और रोकथाम के कुछ सुझाव देते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

5. रेडियो के लिए समाचार-लेखन में किन-किन बुनियादी बातों का ध्यान रखना आवश्यक है? सोदाहरण उल्लेख कीजिए। **5**

अथवा

इंटरनेट पत्रकारिता सूचनाओं को तत्काल कैसे उपलब्ध कराती है? उदाहरण-सहित स्पष्ट कीजिए।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक दो वाक्यों में दीजिए :

(क) खोजी रिपोर्ट (इन्वेस्टीगेटिव रिपोर्ट) क्या होती है ? इसका इस्तेमाल कब किया जाता है? **1**

(ख) संपादकीय लेखन से क्या तात्पर्य है? इसे लिखने का अधिकार किसे है? **1**

(ग) भारत में समाचार-पत्रकारिता का प्रारम्भ कब और किससे हुआ? **1**

(घ) हिन्दी में प्रसारण करने वाले किन्हीं दो टी.वी. समाचार-चैनलों के नाम लिखिए। **1**

(ङ) टेलीविजन को जनसंचार का सबसे अधिक लोकप्रिय माध्यम क्यों कहा गया है? **1**

खंड - 'ग'

7. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **8**

तरिवर झरै झरै बन ढाँखा। भइ अनपत्त फूल फर साखा।।
करिन्ह बनाफति कीन्ह हुलासू। मो कहँ भा जग दून उदासू।।
फाग करहि सब चाँचरि जोरी। मोहिं जिय लाइ दीन्हि जसि होरी।।
जौं पै पियहि जरत अस भावा। जरत मरत मोहि रोस न आवा।।
रातिहु देवस इहै मन मोरें। लागौं कंत छार जेऊँ तोरें।।

अथवा

जैसे शमी वृक्ष के तने से टिककर
न पहचानने में पहचानते हुए विदुर ने धर्मराज को
निर्निमेष देखा था अंतिम बार

और उनमें से उनका आलोक धीरे-धीरे आगे बढ़कर
मिल गया था युधिष्ठिर में
सिर झुकाए निराश लौटते हैं हम
कि सत्य अंत तक हमसे कुछ नहीं बोला
हाँ, हमने उसके आकार से निकलता वह प्रकाश-पुंज देखा था
हम तक आता हुआ
वह हममें विलीन हुआ या हमसे होता हुआ आगे बढ़ गया
हम कह नहीं सकते।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** के उत्तर लिखिए : **3 + 3 = 6**

(क) 'गीतावली' के पद ''जननी निरखति बान धनुहियाँ'' के आधार पर राम के वन-गमन के पश्चात् माँ कौशल्या की मनःस्थिति का वर्णन कीजिए।

(ख) 'निराला' की कविता 'सरोज-स्मृति' की काव्य-पंक्ति ''दुख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज, जो नहीं कही!'' के आलोक में कवि-हृदय की पीड़ा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(ग) 'तोड़ो' कविता में कवि मन में व्याप्त ऊब तथा खीज को तोड़ने की बात क्यों कहता है? उसे स्पष्ट कीजिए।

9. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं **दो** का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए : **3 + 3 = 6**

(क) किसी अलक्षित सूर्य को
देता हुआ अर्ध्य
शताब्दियों से इसी तरह
गंगा के जल में
अपनी एक टाँग पर खड़ा है यह शहर
अपनी दूसरी टाँग से
बिलकुल बेख़बर!

(ख) श्रमित स्वप्न की मुधमाया में,
गहन-विपिन की तरु-छाया में,
पथिक उनींदी श्रुति में किसने -
यह विहाग की तान उठाई।

(ग) घन आनँद मीत सुजान बिना, सब ही सुख-साज-समाज टरे।

तब हार पहार से लागत हे, अब आनि कै बीच पहार परे।।

10. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: **6**

दुनिया में त्याग नहीं है, प्रेम नहीं है, परार्थ नहीं है, परमार्थ नहीं है - है केवल प्रचंड स्वार्थ। भीतर की जिजीविषा - जीते रहने की प्रचंड इच्छा ही - अगर बड़ी बात हो तो फिर यह सारी बड़ी-बड़ी बोलियाँ, जिनके बल पर दल बनाए जाते हैं, शत्रुमर्दन का अभिनय किया जाता है, देशोद्धार का नारा लगाया जाता है, साहित्य और कला की महिमा गाई जाती है, झूठ है। इसके द्वारा कोई-न-कोई अपना बड़ा स्वार्थ सिद्ध करता है। लेकिन अंतरतर से कोई कह रहा है, ऐसा सोचना ग़लत ढंग से सोचना है। स्वार्थ से भी बड़ी कोई-न-कोई बात अवश्य है, जिजीविषा से भी प्रचंड कोई-न-कोई शक्ति अवश्य है।

अथवा

उसके चित्र के चमकीले रंग और पार्श्वभूमि की गहरी काली रेखाएँ - दोनों ही यथार्थ जीवन से उत्पन्न होते हैं। इसलिए प्रजापति-कवि गंभीर यथार्थवादी होता है, ऐसा यथार्थवादी जिसके पाँव वर्तमान की धरती पर हैं ओर आँखें भविष्य के क्षितिज पर लगी हुई हैं। इसलिए मनुष्य साहित्य में अपने सुख-दुख की बात ही नहीं सुनता, वह उसमें आशा का स्वर भी सुनता है। साहित्य थके हुए मनुष्य के लिए विश्रांति ही नहीं है, वह उसे आगे बढ़ने के लिए उत्साहित भी करता है।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** के उत्तर दीजिए : **4 + 4 = 8**

(क) 'जहाँ कोई वापसी नहीं' पाठ के आधार पर प्रकृति के कारण विस्थापन और औद्योगीकरण के कारण विस्थापन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

(ख) ''फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने बड़ी बहुरिया की पीड़ा को, उसके भीतर के हाहाकार को संवदिया के माध्यम से अपनी पूरी सहानुभूति प्रदान की है।'' - इस कथन की समीक्षा कीजिए।

(ग) ''मनोकामना की गाँठ भी अद्‌भुत, अनूठी है, इधर बाँधो उधर लग जाती है।'' कथन के आधार पर 'दूसरा देवदास' कहानी की पारो की मनोदशा का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

12. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' **अथवा** घनानंद के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी किन्हीं दो प्रमुख काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। **6**

अथवा

रामचंद्र शुक्ल **अथवा** भीष्म साहनी के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली की दो प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर दीजिए : **3×3 = 9**

(क) ''यह फूस की राख नहीं, उसकी अभिलाषाओं की राख थी'' - इस कथन का संदर्भ-सहित विवेचन कीजिए।

(ख) 'आरोहण' कहानी में बूढ़े तिरलोक सिंह को पहाड़ पर चढ़ना जैसी नौकरी की बात अजीब क्यों लगी?

(ग) 'बिस्कोहर की माटी' के आधार पर बिस्कोहर की बरसात का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(घ) 'अपना मालवा' में लेखक ने यह क्यों कहा कि अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता जैसा गिरा करता था? स्पष्ट कीजिए।

14. ''खेल में रोना कैसा? खेल हँसने के लिए, दिल बहलाने के लिए है, रोने के लिए नहीं।'' इस कथन के आलोक में सूरदास का चरित्र-चित्रण कीजिए। **6**

अथवा

'आरोहण' पाठ के आधार पर सोदाहरण प्रतिपादित कीजिए कि पहाड़ों में जीवन अत्यंत कठिन होता है।

अंक योजना - हिंदी (ऐच्छिक)

सामान्य निर्देश :

1. अंक-योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। अंक-योजना में दिए गए उत्तर-बिंदु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न किंतु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएं।

2. मूल्यांकन करने वाले परीक्षकों के साथ जब तक प्रथम दिन वैयक्तिक अथवा सामूहिक रूप से अंक-योजना पर भली-भाँति आद्योपांत विचार-विनियम नहीं हो जाता, तब तक मूल्यांकन आरंभ न कराया जाए।

3. मूल्यांकन अपनी निजी व्याख्या के अनुसार न करके अंक-योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए।

4 प्रश्नों के उपभागों के उत्तरों पर दाईं ओर अंक दिए जाएँ। बाद में उपभागों के इन अंकों का योग बाईं ओर के हाशिए में लिखकर उसे गोलाकृत कर दिया जाए।

5. यदि प्रश्न का कोई उपभाग नहीं है तो उस पर बाईं ओर ही अंक देकर उन्हें गोलाकृत कर दिया जाए।

6 यदि परीक्षार्थी ने किसी प्रश्न का अतिरिक्त उत्तर भी लिख दिया है तो उस उत्तर पर अंक दिए जाएं जिसे पहले लिखा गया हो।

7. संक्षिप्त, किन्तु उपयुक्त विवेचन के साथ प्रस्तुत किया गया बिंदुवत उत्तर विस्तृत विवेचन की अपेक्षा अच्छा माना जाएगा। ऐसे उत्तरों को उचित महत्व देने की अपेक्षा है।

8. बार-बार की गई एक ही प्रकार की अशुद्ध वर्तनी पर अंक न काटें।

9. अपठित गद्यांश और काव्यांश के प्रश्नों में परीक्षार्थियों की समझ, बोध क्षमता और ग्रहण शीलता का परीक्षण किया जाता है, अतएव इनके उत्तरों में अभिव्यक्तिगत योग्यता को अधिक महत्त्व न दिया जाए जिससे परीक्षार्थियों को अकारण हानि हो।

10. मूल्यांकन में संपूर्ण अंक पैमाने - 0 से 100 का प्रयोग अभीष्ट है, अर्थात् परीक्षार्थियों ने यदि सभी अपेक्षित उत्तर-बिंदुओं का उल्लेख किया है तो उसे शत-प्रतिशत अंक दिए जाएं।

प्रश्न-पत्र-संख्या 29/1/1

खंड - 'क' **15 अंक**

1. (क) किसी भी जीव को अकारण दुख न पहुंचाना, उनके साथ सद्व्यवहार करना व उन्हें सुख पहुंचाना। 2

(ख) जिस जीवन-शैली में अहिंसा सर्वोपरि हो। संकल्पपूर्वक वध न करना, अकारण दुख व पीड़ा न पहुंचाना, सभी प्राणियों को मित्रवत् समझना -आदि अनुकरणीय है। 2

(ग) जैन धर्म के प्रवर्त्तक भगवान महावीर जी ने जियो और जीने दो की बात कही। जिसका तात्पर्य है - सुखपूर्वक जियो व दूसरों को भी प्रसन्नता व आराम से जीवन-यापन करने दो। 2

(घ) क्योंकि क्रोध हिंसा की भावना का आरंभिक रूप है। क्रोध में व्यक्ति दूसरे को शारीरिक आघात और मानसिक कष्ट देता है। द्वेष भी बदले की भावना को जन्म देता है। 2

(ङ) 'क्षमा' चरित्र का, जीवन का उदात्त भाव है। यह हमारे परिवार से सामंजस्य कराने व पारस्परिक प्रेम को बढ़ावा देने में अहम् भूमिका निभाता है। क्षमा कर देने से शत्रु भी मित्रवत् व्यवहार करते हैं। 2

(च) क्रोध से बुद्धि का नाश विवेकहीन हो अनुचित कार्य करना, ऊंच-नीच, अच्छे-बुरे का ध्यान न रहना। क्रोध हिंसा की प्रवृत्ति का एक आरंभिक रूप है क्योंकि वह अकारण या क्रोध में दूसरों को पीड़ा पहुंचाने या मरने-मारने पर उतारू हो जाने की प्रवृत्ति होने के कारण क्रोध को हिंसा का आरंभिक रूप माना है। 2

(छ) 'अन्' - उपसर्ग

एक - प्रत्यय ½+½ = 1

(ज) विशेषण :-

उन्नतिशील/उन्नत

क्षमाशील/क्षम्य ½+½ = 1

(झ) 'जीवन में अहिंसा का महत्व', 'अहिंसात्मक जीवन-शैली या कोई अन्य उपयुक्त शीर्षक। 1

2. अपठित काव्यांश - प्रत्येक उत्तर के लिए एक अंक निर्धारित है। 1×5 = 5 अंक

(क) धरती पर किसी एक का अधिकार नहीं, यह सभी की है।

(ख) इस धरती पर सभी को सभी सुखों के उपयभोग और निडर होकर जीने का अधिकार है।

(ग) सभी को हवा, पानी, प्रकाश, अग्नि, अकाश और भूमि के उपयोग -उपभोग की स्वतंत्रता चाहिए।

(घ) सुख-सुविधाओ के बंटवारे को लेकर मनुष्य-मनुष्य के बीच संघर्ष हो रहे हैं।

(ङ) स्वार्थ और संकीर्ण भावना के कारण।

अथवा

(क) झांसी की रानी, लक्ष्मीबाई की। बीरांगना होने के कारण ही उसे 'मर्दानी' कहा गया है।

(ख) जिस प्रकार माला टूट जाने पर उसके मनके बिखर जाते हैं, उसी प्रकार रानी लक्ष्मीबाई भी विजयी होते-होते यहां शहीद हो गई।

(ग) रानी लक्ष्मीबाई का महत्व उसके शहीद होने के बाद अधिक बढ़ गया क्योंकि अब वह स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की प्रेरणा देती है।

(घ) आखिरी सांस तक वह लड़ती रही, उसने वीरांगना की भांति युद्ध किया और अंत में अपना जीवन दे दिया।

(कविता की उपयुक्त पंक्ति उद्धृत करने पर भी अंक दें)

(ङ) 'रानी की समाधि' देशकाल की सीमाओं के पार होकर युगों-युगों तक बलिदान व देश-प्रेम की प्रेरणा देती रहेगी।

खंड 'ख'

3. किसी एक विषय पर लगभग 400 शब्दों में निबंध-

1.	भूमिका	1	
2.	विषयवस्तु का सुसंबद्ध प्रतिवादन	6	10 अंक
3.	उपसंहार	1	
4.	भाषा-शुद्धता और अभिव्यक्ति कौशल	2	

4. पत्र-लेखन का अंक विभाजन :

1.	प्रारंभ और समापन की औपचारिकताएं	½+½	
2.	प्रश्नानुसार विषयवस्तु	3	5 अंक
3.	भाषाशुद्धता और प्रस्तुति	1	

5. i) मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि छपे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है। उसे आप धीरे-धीरे समझ कर और आराम से पढ़ सकते हैं।

ii) आप उन्हें लम्बे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं। 5 अंक

iii) यह लिखित भाषा का विस्तार है। लिखित भाषा में व्याकरण, वर्तनी, शब्दों की शुद्धता आदि का ध्यान रखना पड़ता है।

iv) यह चिंतन, मनन व विश्लेषण का माध्यम है।

v) लेखकों और पत्रकारों को प्रकाशन की सीमा का पूरा ध्यान रखना पड़ता है।

अथवा

दूरदर्शन पर समाचार प्रस्तुत करते समय वाचक को कम से कम समय में कम शब्दों में ज़्यादा से ज़्यादा ख़बरें देनी होती हैं।

सावधानियां-

- भाषा-शैली के स्तर पर
- प्रचलित सरल शताब्दी

- सरल और छोटे वाक्य
- गैर-जरूरी विशेषणों अतिरंजित उपमाओं से बचना
- स्पष्ट उच्चारण
- सामग्री और विजुअल्स में तालमेल
- कोई अन्य उपयुक्त बिन्दु

5. पांचों प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में देने हैंः- 5 अंक

(क) वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय 'तहलका डॉटकॉम' को जाता है। 1

(ख) उलटा पिरामिड-शैली में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है और उसके बाद घटते हुए महत्वक्रम में अन्य तथ्यों या सूचनाओं को लिखा जाता है। 1

(ग) फ़ीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है, जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना, सुशिक्षित करना और मनोरंजन करना होता है। 1

(घ) स्तंभ-लेखन :- विचारपरक लेखन का एक प्रमुख रूप स्तंभ लेखन है। इसमें कुछ महत्वपूर्ण लेखक अपनी रुचि व योग्यतानुसार अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। अखबार भी उन्हें उनकी लोकप्रियता देखकर एक नियमित स्तंभ लिखने का जिम्मा दे देते हैं। 1

(ङ) खोजी रिपोर्ट, इन-डेप्थ रिपोर्ट, विश्लेषणात्मक रिपोर्ट और विवरणात्मक रिपोर्ट मे से कोई दो बताने हैं। 1

'खंड 'ग'

7. सप्रसंग व्याख्या-

• संदर्भ कविता और कवि का नाम	½+½	
• पूर्वापर प्रसंग	1	
• व्याख्या बिंदुओं का स्पष्टीकरण	4	8 अंक
• शिल्पगत विशेषताएं	1	
• भाषा-शुद्धता व अभिव्यक्ति कौशल	1	

अथवा

- कविता, घनानंद।
- इस कविता में कवि अपनी प्रेयसी को उलाहना देता है।
- व्याख्या बिंदु-
  - मिलन के लिए आनाकानी, परंतु आरसी में दर्शन कब तक करती रहोगी?
  - मेरी मूक पुकार तुम्हें बुलाती है।
  - कब तक कानों में रुई डाले रहोगी।
  - मेरी भी जिद हैं, आखिर कभी तो मेरी पुकार सुनोगी
- विशेष -
  - कवि की प्रिय- मिलन की आकांक्षा व्यंजित हुई है।
  - नायिका सुजान की निष्ठुरता का स्वरूप।
  - अनुप्रास अलंकार।
  - 'कान में रुई डालना' मुहावरे का प्रयोग।
  - वियोग श्रृंगार रस।
  - कवित्त छंद।

अथवा

- 'बनारस', केदारनाथ सिंह।
- बनारस के प्राकृतिक सौंदर्य व वैभव का वर्णन।
- व्याख्या बिंदु -
  - बनारस में बसंत का आगमन।
  - श्रद्धालु जन दशाश्वमेध घाट पर आकर संवेदनशील हो उठते हैं।
  - घाट पर उपस्थित बंदरों की आंखों मे नमी।
  - भिखारी खाली कटोरों में अन्नदाता से उम्मीद लगाए बैठे हैं।

- विशेष -
  - शिवनगरी बनारस के घाट पर उमड़ती भीड़ का कलात्मक वर्णन।
  - देशज शब्द - सुगबुगाना।
  - खाली कटोरों में बसंत का उतरना - लाक्षणिक प्रयोग।
  - मुक्त छंद।

8. (किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित) 3+3=6 अंक

(क) सागर का आशय समाज से और बूंद का व्यक्ति से है। बूंद के अस्तित्व का सागर में विलय होता है। बूंद क्षणिक है, नश्वर है, परंतु निरर्थक नहीं।

(ख) इस पद में प्रकृति की प्रफुल्लता देख वियोगिनी राधा नयन मूंद लेती है। उसे कृष्ण की स्मृति सालने लगती है। इसी प्रकार भ्रमर और कोयल की ध्वनि सुन कान ढक लेती है। दीन दृष्टि से प्रिय के आगमन की प्रतीक्षा करती है। प्रिय से मिलने की उत्कंठा है।

(ग) ईमानदारी के कारण आज वह हाथ फैलाने को विवश है। भ्रष्ट आचरण से वह धनी हो जाता। आस्थावान, ईमानदार और संवदेनशील लोग यह सब नहीं कर सके अतः आज भी वे गरीब है।

9. (किन्हीं दो का काव्य - सौंदर्य अपेक्षित) 3+3 = 6 अंक

(क) भाव और शिल्प सौंदर्य के दो-दो बिन्दुओं का उल्लेख पर्याप्त मानें।

भाव सौंदर्य

- प्राकृतिक सौंदर्य का मनोहारी चित्रण।
- विभिन्न देशों से आए व्याकुल एवं विक्षुब्ध प्राणी भारत में अपार शांति का अनुभव करते हैं।
- उषा रूपी पनिहारिन स्वर्ण कलश (सूर्य के रूप में) से सुखों की वर्षा करती है।
- तारे अपनी मस्ती में ऊघं रहे हैं।

शिल्प सौंदर्य

- मानवीकरण, रूपक अलंकार!
- गेयता, माधुर्य एवं प्रसाद गुण!
- तत्सम शब्दावली, खड़ी बोली!
- लाक्षणिक प्रयोग।

(ख) **भाव सौंदर्य**

- पूस मास की सर्दी में विरहणी नागमती की वियोगजन्य पीड़ा का चित्रण।
- रात लंबी और प्रियतम परदेश में।
- विरह रूपी बाज की दृष्टि।
- रक्त सूख गया, मास गल गया है केवल पंख शेष है, प्रियतमा का आग्रह कि प्रिय वही समेट लो।

शिल्प सौंदर्य

- नागमती के विरह का मार्मिक चित्रण।
- वियोग श्रृंगार का वर्णन।
- रूपक, अतिशयोक्ति, अनुप्रास अलंकार।
- अवधी भाषा।
- चौपाई, दोहा छंद।

(ग) **भाव-सौंदर्य**

- लाल बजरी पर गिरे पीले पत्तों की चरमराहट से वसंत आगमन की सूचना।
- प्रातः कालीन हवा में ज़रा सी गर्माई - मानो, अभी-अभी गर्म पानी में नहाकर आई हो।
- हवा गोलाकार रूप में फिरकी की तरह आई और चली गई।

शिल्प सौंदर्य

- मानवीकरण, उपमा अलंकार!
- देशज शब्दों का स्वाभाविक प्रयोग।
- खड़ी बोली!

10. गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या -

i)	पाठ का शीर्षक व लेखक का नाम	½+½	
ii)	पूर्वापर संबंध निर्वाह	1	
iii)	व्याख्या- मुख्य बिंदुओं की	3	6 अंक
iv)	टिप्पणी/विशेष कथन/ भाषा-शैली	1	

जरा सी आहट........ सब!

i) पाठ - 'जहां कोई वापसी नहीं'

ii) लेखक - निर्मल वर्मा

iii) पूर्वापर संबंध निर्वाह -

औद्योगिक विकास के दौर में प्राकृतिक सौंदर्य का नष्ट होना व लोगों का अपने परिवेश से उखड़ना।

iv) व्याख्या बिंदु -

- युवा हिरणियों ....
- कृषक महिलाओं का चौकना और फिर कार्य में संलग्न हो जाना।
- वे न डरती है, न काम छोड़ भागती है। अपितु मुस्कुराती हैं।
- यह दृश्य, इसकी मोहकता लेखक को आने वाले कल की चिंता- जब औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप सब मटियामेट हो जाएगा- में डाल देती है।

v) भाषा काव्यात्मक - धान रोपती कृषक महिलाओं के चौंकने की स्थिति की तुलना वन्य हिरणियों से करना आदि।

अथवा

i) पाठ - 'यथास्मै रोचते विश्वम्'

लेखक - रामविलास शर्मा

ii) आज के युग में साहित्यकार की रचना-धर्मिता पर प्रकाश

iii) व्याख्या बिंदु - श्री कृष्ण के पांचजन्य शंख से साहित्य की तुलना करते हुए लेखक का कहना है कि साहित्यकारों और भाग्य के भरोसे रहने वाले निरुद्यमियों/आलसियों को संग्राम से जूझने की प्रेरणा देता है उनमें आत्मविश्वास जगाता है, उन्हें पुरुषार्थी बनाता है।

iv) भाषा शैली - भाषा सहज, प्रभावी और मुहावरेदार है। तत्सम शब्दों का सहज प्रयोग है।

11. (क) किन्हीं दो का उत्तर दो-दो बिंदुओं में अपेक्षित - 4+4=8 अंक

- गाड़ी पर सवार होने के बाद हरगोविन्द को पुराने दिनों और पुराने संवादों की याद आने लगी।
- बड़ी बहुरिया के संवाद का एक-एक शब्द उनके मन में चुभने लगा।
- वह सोचने लगा कि संवाद सुनाते समय वह भी बड़ी बहुरिया की तरह रोएगा।
- अपनी इस मनः स्थिति से छुटकारा पाने के लिए वह अपने बैठे हुए सहयात्री से बातचीत करने लगा ताकि उसका मन बदल जाए।

(ख) - विपरीत परिस्थितियों में भी हंसकर जीना सीखो। 6

- प्रत्येक दशा में अपना लक्ष्य प्राप्त करके रहो।
- दूसरों के दूवार पर भीख मांगने मत जाओ।
- सुख-दुखमयी परिस्थितियों में भी हंसकर जीना सीखो।
- अप्रिय को भी प्रिय के समान ही सहर्ष स्वीकार करो।
- कुटज विपरीत दशाओं में भी पुष्पित और पल्लवित होता है।
- वह अपराजेय जीवन-शक्ति, स्वावलंबन और आत्मविश्वास का प्रतीक है।

(ग) - मनसा देवी पर एक और चुनरी चढ़ाने का निर्णय लेती है।

- वह देवदास के साथ अपने-आप को मन से जोड़ लेती है।

- वह लालच के अनुभव करते हुए भी अपने प्रेम को अभिव्यक्त करती है।

- उसके चित्त में संभव के विषय में अनेक प्रश्न जन्म लेते हैं।

- उसके नाम की जिज्ञासा उसके मन में प्रबल हो उठती है।

12. किसी एक कवि/ लेखक की जीवनी अपेक्षित 6

अंक विभाजन : संक्षिप्त जीवन परिचय -2

दो रचनाओं का परिचय -2

साहित्य की, भाषा-शैली की दो विशेषताएं -2

केशवदास : रामभक्ति शाखा के प्रमुख रीतिकालीन कवि, जन्म - 1555 ईं, बेतवा नदी के तट पर स्थित ओरछा नगर।

आश्रयदाता - ओरछापति महाराज इंद्रजीत सिंह, वीरसिंह देव का भी आश्रय प्राप्त। संगीत, साहिंत्य, धर्मशास्त्र, राजनीति, ज्योतिष, वैद्यक सभी विषयों के अध्येता।

रचनाएं : रसिका प्रिया, कविप्रिया, रामचंद्र चंद्रिका, रतनबावनी आदि।

काव्यगत विशेषताएं- काव्य-भाषा ब्रज, बुंदेली के शब्दों का प्रयोग, संस्कृत प्रभाव। रचनाओं में तीन रूप - आचार्य, महाकवि और इतिहासकार। व्यवस्थित और सर्वांगपूर्ण रीतिग्रंथ प्रस्तुत किए। मृत्यु - सन् 1617 में।

निराला : जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले में 1897। शिक्षा मैट्रिक, अल्पायु में विवाह। पिताजी की मृत्यु-उपरांत आर्थिक संकट- संघर्ष, पत्नी व पुत्री सरोज की अकाल मृत्यु। जीवन दिशा बदल गई तो रामकृष्ण मिशन, अद्वैत आश्रम, बैलूर मठ चले गए। गंभीर दार्शनिक, आत्माभिमानी एंव मानवतावादी थे। दीन-दुखियों और असहायों के सहायक 15 अक्तूबर 1961 ई. में स्वर्ग सिधार गए।

रचनाएं - परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता, चतुरी चमार, अप्सरा, अलका, लिली, सखी!

काव्यगत विशेषताएं - बहुमुखी प्रतिभा, काव्य में अदम्य पौरुष भी, श्रृंगार भी। दार्शनिकता, संवेदना, जागरण, उन्माद। कहीं छायावादी, कहीं रहस्यवादी, कहीं प्रगतिवादी।

अथवा

रामचन्द्रशुक्लः जन्म बस्ती जिले के 'अगोना' ग्राम के सन् 1884 ई. में। मिशन स्कूल से शिक्षा और उसी स्कूल से ड्राइंग मास्टर। 'हिंदी शब्द-सागर' के सहायक संपादक- नागरी प्रचारिणी सभा, काशी में। हिंदू विश्वद्यिालय में हिंदी प्राध्यापक, हिंदी विभाग के अध्यक्ष हुए। सन् 1941 में मृत्यु।

रचनाएंः तुलसीदास, जायसी ग्रंथावली की भूमिका, सूरदास, चिंतामणि (तीन भाग) हिन्दी साहित्य का इतिहास और रस मीमांसा।

साहित्यिक विशेषताएं : आलोचक, इतिहासकार और साहित्य-चिंतक। विज्ञान, दर्शन, इतिहास, भाषा, विज्ञान, साहित्य और समाज से संबंधित मौलिक लेखन, संपादन और अनुवादों के बीच ज्ञान-सम्पन्न व्यक्तित्व उभरा। भाषा-शैली प्रौढ़, सजीव, प्रांजल एवं भावानुकूल। गद्य शैली विवेचनात्मक।

पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी'ः जन्म सन् 1883 ई. में पुरानी बस्ती, जयपुर में। संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, ब्रज, गुजराती, इतिहास और पुरातत्व उनका प्रिय विषय। प्रतिभा पत्रिका, नागरीप्रचारिणी पत्रिका में रचनाकार व्यक्तित्व उभरा। अध्यापन - कार्य किया। इतिहास दिवाकर की उपाधि से सम्मानित। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के प्राचार्य।

गुलेरी जी का देहांत 1922 ई.।

प्रसिद्ध कहानियां -
1. सुखमय जीवन
2. बुद्धू का कांटा
3. उसने कहा था

13. (किन्हीं तीन के उत्तर अपेक्षित) 3+3+3= 9 अंक

(क)
- बदले की भावना से भैरों ने सूरदास की झोपड़ी में आग लगा दी और वहां उसे रुपयों की थैली मिल गई।
- सूरदास सोचता है कि भिखारियों के लिए धन-संचय पाप के समान है, अपमान की बात है। दरिद्रता इतनी लज्जा की बात नहीं, जितना धन-संचय। इसलिए सूरदास अपनी आर्थिक हानि जगधर से छुपा रहा था।

(ख) • भूपसिंह पहाड़ों पर चढ़ने की कला में अत्यंत कुशल।

• परिश्रमी - झरने का रुख बदलने और खेती को बढ़ाने में।

• स्वाभिमानी- माही गांव के लोगों ने बकरी के बच्चे की बलि दी तो उन्होंने उनसे बात करना बंद कर दिया।

• खुद्दारी - छोटे भाई के शहर जाने के प्रस्ताव को ठुकरा देता है।

(कोई तीन विशेषताएं अपेक्षित)

(ग) • धोती/कमीज में प्याज बांधना।

• आम का पन्ना।

• आम भून कर देह लेपना, नहाना।

मुक्त उत्तर संभव। इसके पक्ष या विपक्ष में तर्क-संगत उत्तर स्वीकार्य।

(घ) • पाश्चात्य दृष्टिकोण से अपनाई जा रही सभ्यता हमें उजाड़ देगी।

- प्राकृतिक वनों का विनाश!
- पर्यावरणीय असंतुलन!
- यूरोप- अमेरिका की खाऊ-उजाड़ू जीवन पद्धति, संस्कृति, सभ्यता हमारी धरती को नष्ट करने पर तुली है।

• सही अर्थों में हम उजड़ रहे हैं।

- पर्यावरणीय सरोकरों ने आम जनता को जोड़ दिया है, सचेत किया है।

(मुक्त उत्तर संभव। उपयुक्त उत्तर स्वीकार्य)

14. i) सूरदास अंधा है। एक झोंपडी थी, वह भी जल गई। जीवन भर की कमाई भी चोरी हो गई। ऐसी स्थिति में भी वह निराश नहीं हुआ। उसने अपना विश्वास बनाए रखा। 6

ii) वह निराशा की अपेक्षा बार-बार प्रयास करने में विश्वास रखता है।

iii) वह पुनर्निर्माण में विश्वास रखता है, प्रतिशोध में नहीं।

iv) वह परोपकारी है। अपनी जमीन पर एक कुआँ व मंदिर बनवाने हेतु धन संचय करता है।

v) परिस्थितियों उसे मर्माहत करती हैं, परन्तु वह फिर से पुनर्निर्माण का संकल्प लेकर कर्मक्षेत्र में अवतरित हो जाता है।

vi) वह जीवन के घटनाक्रम को खेल मानकर संतोष करता है। खेल में रोना नहीं होता वह इस भावना से जीवन जीता है।

vii) वह स्वाभिमानी, उदार, आदर्शवादी व्यक्ति है।

अथवा

सैलानियों को पर्वतों की यात्रा भले ही आनंदित करे, वास्तव में पहाड़ी जीवन अत्यंत कठिन होता है।

i) आवागमन की कोई विशेष सुविधा नहीं होती।

ii) दुरूह चढ़ाई के लिए घोड़ों का सहारा लेना पड़ता है।

iii) मार्ग अत्यन्त संकरे व भयावह होते हैं।

iv) चट्टानों के खिसकते से मार्ग कभी भी अवरुद्ध होने की संभावना रहती है।

v) खेती के लिए समतल भूमि का अभाव रहता है।

vi) पानी की भी समस्या निरंतर रहती है।

vii) पर्वतीय प्रदेशों का जीवन संघर्षमय, कठिन एवं दुखद है।

प्रश्न-पत्र-संख्या 29/1

खंड - 'क'

1. अपठित गद्यांश के प्रश्नों के उत्तरः

(क) सौन्दर्य वस्तु या दृश्य में नहीं देखने वाले की दृष्टि और उसकी सौंदर्य चेतना में अवस्थित है। 1

(ख) ठोस भौतिक-प्राकृतिक पदार्थों, मानवीय भावनाओं या काल्पनिक संसार के साथ-साथ चींटी, छिपकली, चूहे, बिल्ली जैसे विषयों पर। 1

(ग) आज का कवि कदम-कदम पर जीवन और जगत की सभी राहो, विषयों, पदार्थों एवं जीवों को अपनी लेखनी का विषय बनाता है। 2

(घ) हमारे भावों-विचारों को उदात्त बनाना, उनमें परिष्कार कर उन्हें जनोपयोगी बनाना। 1

(ङ) कुटिलता, क्रूरता, दंभ, नीचता जैसे दुर्गुणों से वितृष्णा। 2

(च) महापुरूषों के भावों-विचारों की उच्चता से काव्य में भी गरिमा आती है। 1

(छ) कबीर, रहीम, तुलसी आदि की अनेक प्रेरणाप्रद पंक्तियां निराशा से आशा का संचार कर डूबते का सहारा बनती है। इसलिए सूक्तियों के रूप में प्रस्तुत। 1

(ज) भावों और विचारों की उच्चता से काव्य में गरिमा। 1

(झ) सरल-सहज जीवन भी आकर्षक, आनददायक निराशा में आशा का संचार, डूबते का सहारा। 1

(ञ) काव्य और जीवन, जीवन में काव्य का महत्व या अन्य कोई उपयुक्त शीर्षक। 1

(ट) 'अन्' उपसर्ग 1

'वाद'/'ई' प्रत्यय

(ठ) पर्याय- 1

घमंड - दंभ (पूरा एक अंक दे)

(ड) मिश्रवाक्य - कविता की जो प्रेरणापद पंक्तियां होती हैं, वे निराशा में आशा का संचार कर सकती है। 1

2. अपठित काव्यांश में पांच प्रश्न पूछे गए हैं। प्रत्येक उत्तर का एक अंक है। 1×5 = 5 अंक

(क) ग्राम देवता भारत के गांव में रहता है क्योंकि उसे शहरी कोलाहल एव चकाचौंध की अपेक्षा गांव की मिट्टी, प्रकृति का स्वच्छ विशुद्ध वातावरण प्रिय है।

(ख) सोने-चांदी के भौतिक आकर्षणों की अपेक्षा खेतों की मिट्टी और एकाकी सिमटा-सा कर्मरत जीवन ही प्रिय है। जीवन की चकाचौंध की अपेक्षा प्रकृति का स्वच्छ वातावरण प्रिय है।

(ग) भारत का किसान अपनत्व भाव से शुद्ध कर्म एव शारीरिक श्रम से दिन-रात पसीना बहाकर अन्न-धान पैदा करता है। यह पसीना ही गंगा जल की धवल धार है।

(घ) कवि किसान को जन-मन का अधिनायक मानते हुए उसे देश के राजसिंहासन पर बिठाना चाहता है, क्योंकि किसान देश को धन-धान्य से भरपूर कर खुशहाल बनाता है।

(ङ) हे किसान, तुम निरंतर मिट्टी मे कर्मरत रह खेती-बाड़ी करने वाले, अन्न-धान पैदा करने वाले और बंजरभूमि को उपजाऊ बना देश को वैभवशाली बनाने वाले हो, अतः तुम विशेष हो।

अथवा

(क) निरुद्यमी प्राणी, भाग्य के भरोसे बैठे रहने वाले लोग।

(ख) मनुष्य के उद्यम के आगे, कठोर परिश्रमी लोगों की हिम्मत और श्रमजल के आगे प्रकृति झुकती है। यह धरा रत्नगर्भा है, श्रम द्वारा ही सब कुछ मिलता है।

(ग) शोषण करने वाले भोले-भोले परिश्रमी लोगों पर अन्याय, अत्याचार करते हैं और दूसरों का श्रम-फल भोगते हैं, हेरा-फेरी कर अपने अवगुणों और किए गए अन्याय को भाग्यवाद का नाम देते हैं, पर है ये शोषण का हथियार ही अर्थात् यह शोषण का ही दूसरा नाम है।

(घ) कर्मवीर, धर्मवीर, युद्धवीर अर्थात् सभी कर्मठ, परिश्रमी लोग असंभव को संभव में तथा दुर्भाग्य व अप्राप्य को सौभाग्य व प्राप्य में बदल लेते हैं। भ्रुवों से पानी बहाकर अर्थात् मेहनत कर, पसीना बहाकर।

(ङ) काव्यांश का मुख्यभाग- पुरूषार्थ द्वारा जीवन यापन करना न कि भाग्य के भरोसे रहना। मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है। वह श्रम के बल पर उसे बनाता है।

खंड - 'ख'

3. किसी एक विषय पर निबंध - 10 अंक

अंक विभाजन इस प्रकार है -

- भूमिका 1
- विषयवस्तु का सुसंबद्ध प्रतिपादन 5
- उपसंहार 1
- भाषा शुद्धता, अभिव्यक्ति कौशल 3

4. पत्र का अंक विभाजन- 5 अंक

- पत्र का प्रारूप : औपचारिकताएं 2
- विषय वस्तु का प्रतिपादन 2
- भाषा-शैली 1

5. रेडियो के लिए समाचार-लेखन की बुनियादी बातेंः- 5 अंक

क) साफ़ सुथरी और टाइप कॉपी - जिससे समाचार-वाचक को कोई कठिनाई न हो।

ख) पृष्ठ पर दोनों ओर पर्याप्त हाशिया, एक पंक्ति में 12-13 शब्द, पंक्ति के आखिर में कोई शब्द अधूरा नहीं, आखिर में कोई पंक्ति अधूरी नहीं, एक से 10 तक के अंक शब्दों में और 11 से 999 तक अंकों में।

ग) डेडलाइन, संदर्भ और संक्षिप्ताक्षर के प्रयोग में सावधानी बरती जानी चाहिए।

अथवा

इंटरनेट पत्रकारिता यानी ऑनलाइन, वेब पत्रकारिता। उसे आप सूचना, मनोरंजन, ज्ञान और व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक सवारी के आदान-प्रदान के लिए इस्तेमाल कर सकते है। रिपोर्टर अपनी खबर को एक जगह से दूसरी जगह तक 'ई' मेल के जरिए भेजने और समाचारों के संकलन, खबरों के सत्यापन तथा पुष्टिकरण में भी इसका इस्तेमाल करता है। चंद मिनटों में इंटरनेट विश्वव्यापी संजाल के भीतर से कोई भी पृष्ठभूमि खोजी जा सकती है।

6. पांच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तरः 5 अंक

(क) खोजी रिपोर्ट - इसमें रिपोर्टर मौलिक शोध और छानबीन के द्वारा ऐसे तथ्य सामने आता है जो पहले से उपलब्ध नहीं थे। इसका इस्तेमाल आमतौर पर भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए किया जाता है। 1

(ख) सम्पादकीय लेखन से तात्पर्य, संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाली अखबार की किसी घटना, समस्या या मुद्दे के प्रति उसके सम्पादक की राय। 'सम्पादकीय' किसी व्यक्ति विशेष के विचार का लेखन नहीं होता। इसे लिखने का अधिकार संपादक और उसके सहयोगियों पर होता है। 1

(ग) भारत में समाचार पत्रकारिता का आंरभ सन् 1780 जेम्स ऑगस्ट सिकी के बंगाल गजट से हुआ। 1

(घ) हिंदी में प्रसारण करने वाले टी.वी. समाचार चैनल 1

1. आज तक

2. स्टार न्यूज

3. जी न्यूज

4. इण्डिया टी.वी.

इनमें से कोई दो लिखें - आजकल प्रसारित होने वाले अन्य नवीनतम चैनल भी लिखे जा सकते है।

(ङ) क्योंकि टेलीविजन पर समाचार वाचन के साथ-साथ घटनाओं को दिखाया भी जाता है। यह देखने और सुनने दोनों का माध्यम है। 1

खंड - 'ग'

7. सप्रसंग व्याख्या

अंक विभाजन :

-	संदर्भ - कविता और कवि का नाम	½+½	
-	पूर्वापर प्रसंग- निर्वाह	1	
-	व्याख्या- बिंदुओं का स्पष्टीकरण	4	8
-	शिल्पगत विशेषताएं	1	
-	भाषा-शुद्धता व अभिव्यक्ति कौशल	1	

- 'पद्मावत' के 'बारहमासा' से उद्धृत,
  - मलिक मुहम्मद जायसी
- फाल्गुन मास में नागमती की विरह- वेदना का चित्रण
- व्याख्या - बिंदु
  - अधिक ठंड, वृक्षों की डालियों का पत्र-विहीन होना।

- वृक्षों के फल-फूल विरह-वेदना बढ़ा रहे हैं।
- रंग डालना, नृत्य करना और इससे नागमती के हृदय में विरह की होली जलना।
- राख बनकर भी प्रिय का स्पर्श पाना चाहती है।

● विशेष -
  - नागमती का विरह चरमोत्कर्ष पर।
  - रूपक, अनुप्रास अलंकार!
  - अवधी भाषा।
  - वियोग श्रृंगार।
  - चौपाई - दोहा छंद।

अथवा

● 'सत्य', विष्णु खरे।

● सत्य को पकड़ पाना कठिन है, उसका कोई आकार नहीं।

● व्याख्या - बिंदु -
  - महाभारत कालीन कथा के प्रसंग द्वारा स्पष्टीकरण।
  - युधिष्ठिर ने सत्य को दृढ़ता से पाने का प्रयास किया। यदि हम भी ऐसा करें तो यह भी संभव है कि सत्य स्वयं ही हमारे सम्मुख आकर खड़ा हो जाए।
  - दृढ़ संकल्प से तलाशने पर सत्य हमारे अंदर अपना प्रकाश भर देता है।
  - हमारे मन में संशय बना रहता है कि सत्य हमारे भीतर मौजूद है भी या नहीं।

● विशेष -
  - सत्य एक अनुभूति है। एक जीवन-मूल्य है। उसे पहचानने के लिए दृढ़ संकल्प चाहिए।
  - पुनरुक्ति, दृष्टांत, विरोधाभास अलंकार।
  - 'सत्य' का मानवीकरण।
  - भाषा का लाक्षणिक प्रयोग।

8. (किन्हीं दो के उत्तर अपेक्षित) 3+3 = 6 अंक

(क) राम की वस्तुओं को देख कौशल्या भाव-विह्वल हो उठतीं। राम की जूतियों को नयनों से लगातीं। राम को नींद से जगाने की बात कहती। राम को कभी राजा दशरथ की गोद में जाने की बात कहती। वन-गमन का ध्यान आते ही स्तब्ध और चकित रह जातीं।

(ख) कवि को असमय दिवंगत हुई पुत्री की स्मृति बेचैन कर रही है। पिता ने दुख से भरे अपने जीवन की कथा किसी से नहीं कही। उसे यह बात सालती रही कि पुत्री के प्रति अपने धर्म का पालन नहीं कर पाया।

(ग) सृजन-हेतु कवि चट्टानें, पत्थर, बंजर व ऊसर भूमि को तोड़ने की बात करता है। मन की बंजर भूमि को, ऊब, खीज, उदासी को तोड़ कर उसमें नवजीवन के आशा-अंकुर बोना चाहता है।

9. भाव सौंदर्य तथा शिल्प-सौंदर्य का उल्लेख 3+3 = 6 अंक

(क)
- बनारस शहर की विचित्रता।
- गंगातट पर उसके सौंदर्य का चित्रण।
- मनुष्य दो हाथों के स्तंभ पर सूर्य को अर्ध्य देता हुआ अपने मदमस्त, दुनिया से बेखबर।
- यहाँ आस्था, श्रद्धा, निष्ठा और विरक्ति का मिला-जुला रूप लक्षित होता है।

शिल्प सौंदर्य -

- प्रकृति वर्णन में मानवीकरण।
- लाक्षणिकता का प्रयोग।
- बनारस शहर के सौंदर्य का मार्मिक चित्रण।
- सहज भाषा, खड़ी बोली।

(ख) 1. इन काव्य पंक्तियों में देवसेना का असफल प्रेम की कल्पना में डूबना।

2. यौवनकाल में स्कन्दगुप्त का देवसेना के प्रति उपेक्षा भाव।

3. जीवन के अंतिम मोड़ पर देवसेना के प्रति अपना प्रणय निवेदन किया।

4. यह निवेदन देवसेना को विहाग-राग के समान लगा।

शिल्प सौंदर्य -

1. स्वप्न को श्रमित कहने में गहरी व्यंजना है

2. गहन-विपिन और 'तरु-छाया' सामासिक शब्द हैं। स्मृति बिम्ब साकार हो उठा है।

(ग) **भाव सौंदर्य -**

- नायिका की प्रेम-दशा की विचित्रता का उल्लेख।
- लंबी अवधि से प्रियतम को निहारती आ रही है फिर भी नयनों की प्यास नहीं बुझी।

काव्य सौंदर्य -

- विशेषोक्ति, अतिशयोक्ति अलंकार।
- मैथिली भाषा।
- माधुर्य गुण
- प्रेम की पल-पल होने वाली नवीनता का वर्णन।

10. गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या :

अंक विभाजन

- पाठ और लेखक का नाम	= ½+½	6 अंक
- पूर्वापर संबंध निर्वाह	= 1	
- व्याख्या	= 3	
- विशेष कथन तथा भाषा शैली	= 1	

i) लेख 'कुटज'। लेखक - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी।

ii) जीना भी एक कला है - सारा संसार अपने लिए जी रहा है। ऋषि याज्ञवल्य ने यह बात अपनी पत्नी मैत्रेयी से कही थी।

iii) लेखक को यह कथन विचित्र लगा कि दुनिया में सभी अपने लिए जी रहे हैं। यहाँ प्रेम, त्याग, परमार्थ जैसी कोई बात नहीं है। यदि यही अंतिम सत्य है, तो देश-प्रेम, कला-साहित्य की उपासना आदि बातें असत्य है, किंतु लेखक कहते हैं कि 'अपने लिए जीना' ऐसा सोचना सही नहीं है। स्वार्थ से ऊपर है - प्रेम, परमार्थ।

विशेष - विवेचनात्मक शैली।

भाषा-सहज, प्रवाहमयी, तत्सम शब्दावली।

अथवा

i) निबंध - 'यथस्मै रोचते विश्वम्'

लेखक - रामविलास शर्मा

ii) लेखक ने प्रजापति (ब्रह्मा) से कवि की तुलना करते हुए स्पष्ट किया कि कवि अपनी रुचि के अनुसार जब विश्व को परिवर्तित करता है तो वह क्या करता है।

iii) प्रजापति - कवि यथार्थ में विश्वास करता है। वह आदर्श और यथार्थ दोनों के उदाहरण वास्तविक जीवन से लेता है वह जीवन में केवल दुख निराशा, पीड़ा के चित्र ही साहित्य में नहीं दिखाता, अपितु सुख, आशा व हर्ष- उल्लास के स्वर भी भरता है। उसका साहित्य मनुष्य को उद्बोधित करता है, प्रेरित करता है भावी जीवन के उज्जवल पक्ष की ओर।

भाषा में सहज प्रवाह, तत्सम शब्दावली। काव्यात्मकता का गुण है।

11. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित :- 4+4 = 8 अंक

(क) प्राकृति के कारण विस्थापन अस्थायी होता है। मुसीबत टल जाने पर लोग पुनः अपने ही स्थान पर लौट जाते हैं। किंतु औद्योगीकरण के कारण लोग अपना घर-बार छोड़ जिस किसी स्थान पर बस जाते हैं तथा वहीं मृत्युपर्यन्त रहते हैं। उनके वंशज भी वहीं रहते हैं। उनका विस्थापन स्थायी होता जा रहा है।

(ख) कहानी में बड़ी बहुरिया के नारकीय जीवन को वाणी मिली है। उसकी गरीबी, अकेलापन और उस पर हुए अत्याचार, सभी का यथार्थ चित्रण किया गया है। उसका दुख-दर्द भरा जीवन संवदिया के हृदय को भी द्रवित कर देता है, आदि उल्लेख अपेक्षित हैं।

(ग) लड़की (पारो) मनसा देवी पर एक और चुनरी चढ़ाने का संकल्प लेती है। वह लड़के (संभव) का नाम भी जानना चाहती है। उसके व्यवहार से प्रेमांकुर का अहसास होने लगता है।

12.	i)	किसी एक कवि के अथवा लेखक के जीवन परिचय का वर्णन	2	
	ii)	कवि या लेखक की रचनाओं का नामोल्लेख।	2	6 अंक
	iii)	दो प्रमुख काव्यगत विशेषताओं का वर्णन अथवा लेखक की भाषा-शैली की दो विशेषताओं का वर्णन।	2	

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

जीवन परिचय

(जन्म - मार्च 1911 कुशीनगर उत्तर प्रदेश

मृत्यु - अप्रैल 1987 नई दिल्ली)

शिक्षा - संस्कृत एवं अंग्रेजी में बी.एस.- सी., एम. ए. अंग्रेजी।

स्वतंत्रता संग्राम में चार वर्ष जेल में बिताए। दो वर्ष नज़रबंद रहे। किसान आंदोलन में सक्रिय रहे। कुछ वर्ष सेना में भी रहे। अनेक देशों की यात्रा की। वहां की प्रकृति, भावनाओं तथा विचारों का अध्ययन

साहित्यिक परिचय :-

साप्ताहिक 'दिनमान' के संस्थापक संपादक रहे। नवभारत टाइम्स का सम्पादन। 'तार सप्तक' दूसरा सप्तक 'तीसरा सप्तक' तथा 'चौथा सप्तक' का सम्पादन।

'कितनी नावों में कितनी बार' काव्य संग्रह पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

रचनाएं - भग्नदूत, चिंता, इत्यलम्, बावरा अहेरी, हरी घास पर क्षण भर, इन्द्र धनु रौंदे हुए ये, अरी ओ करुणा प्रभामय, आँगन के पार द्वार, सागरमुद्रा, नदी के बांक पर, छाया, कितनी नावों में कितनी बार, सन्नाटा आदि।

काव्यगत विशेषताएं :-

भावपक्ष - युगों से चली आ रही घिसी-पिटी परंपराओं को छोड़कर नवीन परंपराओं को अपनाया।

कलापक्ष - परंपरागत काव्य के शिल्प-विधान तथा शैली में परिवर्तन एवं संशोधन करके उसे अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के अनुकूल बनाया है।

भाषा - संस्कृतनिष्ठ, स्वच्छ तथा परिष्कृत खड़ी बोली है।

छंद - छंदों की मान्यता को तोड़ते हुए प्रतीत होते हैं।

अलंकार - अलंकार प्रयोग की अपेक्षा 'बिंब-विधान', प्रतीक योजना और जीवन की समानांतर समीपस्थ अभिव्यक्ति को अपनाया है।

(उपर्युक्त काव्यगत विशेषताओं में से किन्हीं दो का उल्लेख अपेक्षित)

अथवा

घनानंद - (जन्म - 1973, मृत्यु - 1760)

i) रीतिमुक्त अथवा स्वच्छंद कवि। सुजान से प्रेम तथा प्रेम में असफलता। निराश तथा दुखी होकर वृदांवन चले गए और निम्बार्क संप्रदाय में दीक्षित होकर भक्त के रूप में जीवन निर्वाह करने लगे। 2

ii) प्रमुख रचनाएं - विरह लीला, सुजान सागर, रसकेलि वल्ली। 2

iii) लाक्षणिकता, वक्रोक्ति आदि अलंकारों का सुंदर प्रयोग। 2

v) प्रेम का अत्यंत, निर्मल, गंभीर वर्णन।

अथवा

रामचंद्र शुक्ल - (जन्म, शिक्षा, निधन)

i) उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के अगौना नामक गांव में सन् 1884 में हुआ। आरंभिक शिक्षा उर्दू-अंग्रेजी तथा फारसी में हुई थी। मिर्ज़ापुर में वे कुछ समय अध्यापक रहे। काशी हिंदू विश्वविद्यालय में वे हिंदी के प्राध्यापक रहे। यही हिंदी विभागाध्यक्ष के रूप में काम करते हुए सन् 1941 में उनका निधन हो गया? 2

ii) प्रमुख रचनाएं -

1. हिंदी साहित्य का इतिहास
2. गोस्वामी तुलसीदास

3. सूरदास

4. चिंतामणि (चार खंड) और रस मीमांसा आदि। 2

iii) शुक्ल जी की गद्य शैली -

1. विवेचनात्मक है, जिसमें विचारशीलता सूक्ष्म तर्क-योजना तथा सहृदयता का मेल है।

2. व्यंग्य और विनोद का पुट।

3. सारगर्भित, विचार प्रधान, सूत्रात्मक वाक्य - रचना उनकी गद्य शैली की मुख्य विशेषताएं है। 2

अथवा

भीष्म साहनी-

i) भीष्म साहनी का जन्म सन् 1915 में रावलपिंडी में हुआ। अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. तक शिक्षा। पंजाब विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. उपाधि प्राप्त की। 2003 में इनका निधन हुआ। 2

ii) प्रमुख रचनाएं - भाग्यरेखा, कुंतो, भटकती राख, पहला पाठ, पटरिया, हानूश, नीलोफर, माधवी, कविरा खड़ा बाज़ार में (नाटक) गुलेल का खेल बालोपयोगी कहानियां आदि। 2

iii) 1. भाषा में उर्दू शब्दों का प्रयोग। 2

2. विषय के प्रति आत्मीयता।

3. भाषा -शैली में पंजाबी भाषा की सोंधी महक।

4. छोटे-छोटे वाक्यों का सफल प्रयोग

5. संवादों का सटीक वर्णन।

13. कोई तीन प्रश्न करने हैं। 3+3+3 = 9 अंक

(क) सूरदास की झोंपड़ी का जलना और उनमें उसके भीख के रूपयों की थैली का गुम होना, इन सभी की राख में ही तो सूरदास की सारी अभिलाषाएं, उसके भावी सुनहले

स्वप्न व उसकी भावी योजनाएं समाप्त हो गईं। उसने अपने पुरखों का पिंडदान करना था, मिठुआ की शादी करके बहू लानी थी जो उसे भी रोटी पका कर खिलाती। झोंपड़ी जल जाने पर अब कहां रहेंगें? यह प्रश्न भी उसके सामने आ खड़ा हुआ।

(ख) बूढ़े तिरलोक सिंह का अब तक का जीवन पहाड़ पर ही बीता था। पहाड़ पर चढ़ना-उतरना उसकी दिनचर्या थी। अतः अब वह पहाड़ पर चढ़ने जैसी नौकरी की बात सुनता है तो उसे अजीब लगता है।

(ग) कोइयां एक प्रकार का जल-पुष्प, इसे 'कोका बेली' या 'कुमुद' भी कहते हैं। यह जहां कहीं पानी हो वहां पैदा हो जाता है। सरोवरों में शरद की चांदनी का प्रतिबिंब पड़ने पर इसकी खिली हुई पंखड़ियां इकट्ठी होकर जब दिखाई पड़ती है तो बहुत सुंदर लगती हैं।

(घ) उद्योगों के कारण वायुमंडल में कार्बन डाईआक्साइड की अधिकता है। उद्योगों के कचरे से नदी, तालाब, नालियों में पानी गंदला हो गया है। अंधाधुंध जंगल काट दिए गए अतः परिणामतः वर्षा अब पहले की भांति नहीं होती।

14. सूरदास एक आदर्श पात्र है। वह क्षमा, दया, करुणा, सहानुभूति आदि गुणों से पूर्ण मानव है। मिठुआ का लालन-पालन करना, सुभागी को अपने यहां निडर होकर आश्रय देना इसके उदाहरण है। 6 अंक

परिस्थितियों से जूझना उसका स्वभाव है। झोंपडी जल जाने पर उसे पुनः बनाने का संकल्प करना आदि कार्य उसके आशावादी एवं मन की दृढ़ता के परिचायक है।

भारतीय संस्कृति के गुणों- क्षमा, शालीनता, आश्रयहीनों को आश्रय देना, पूर्वजों-पितरों को श्रद्धापूर्वक सम्मान देने में उसका दृढ़ विश्वास है, आदि गुणों पर प्रकाश डालना अपेक्षित है।

अथवा

i) पहाडों में जन-जीवन की अपेक्षित सुविधाएं अभी भी प्राप्त नहीं है।

ii) पहाड़ी जीवन में प्राकृतिक आपदाओं से जूझना पड़ता है।

iii) हिमस्खलन होता रहता है।

iv) मार्ग अत्यंत संकरे तथा खतरनाक है।

v) सड़कों का प्रायः अभाव है।

vi) रास्ते टेढ़े-मेढ़े, जीव-जन्तुओं से भरे हुए, लम्बे और उतार-चढ़ाव से युक्त है।

vii) पहाड़ों में खाद्य-पदार्थों एवं पीने के पानी की भी सुविधा नहीं है।

viii) पहाड़ का जीवन कष्टों भरा है। यहां वर्षा में फिसलन तथा मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं। सर्दियों में सर्दी भी अधिक पड़ती है। अतः पहाडों का जीवन अत्यन्त कठिन है।

iv) कहानी के माध्यम से लेखिका ने प्रेम को बंबईया फिल्मों की परिपाटी से अलग हटा कर उसे पवित्र और स्थायी स्वरूप प्रदान किया है।

v) कथ्य, विषय-वस्तु, भाषा और शिल्प की दृष्टि से कहानी बेजोड है।